कार्यकर्त्ताओं के प्रति संदेश

शंकर गुहा नियोगी

शहीद शंकर गुहा नियोगी यादगार समिति

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा

प्रकाशन काल : 19 दिसम्बर 1992
पुन: मुद्रण : जनवरी 2004

सहयोग मूल्य : 3/- रुपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद
छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी.एम.एम.एस. ऑफिस, दलीराजहरा
जि. दुर्ग (छ.ग.) पिन - 491 228

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस
बालोद, जिला दुर्ग (छ.ग.)

साथियों !

कल और आज, दो दिन लगातार बहुत सारे कार्यकर्ता साथी यहा आकर विचार विमर्श किये। और हमारे बहुत साथी, जिन्होंने विचार विमर्श में भाग नहीं लिया, वे भी बहुत ध्यान लगाकर, मन लगाकर इन विचारों को सुनते रहे। सारे विचार, सारे कार्यकर्ता साथियों के विचार ऐसे सुन्दर ढंग से रखा गया, जो जीवन के साथ जुड़ा हुआ सवाल है। आज समाज के जीवन में जो मुद्दायें हैं, असमतायें हैं, विषमतायें हैं, उनको एक-एक करके, फूल के पंखुड़ियों जैसे खोलकर प्रस्फुटित किया गया और चर्चा रुपी हमारा जो बगीचा है, उसको सुशोभित किया गया।

अच्छी-अच्छी बातें हुयी,और इन बातों में मैंने एक सबके मुंह से सुना, वह है हमें परिवर्तन चाहिये। इस व्यवस्था से हम बहुत दुखी हैं और हमें परिवर्तन चाहिए, हमें इंकलाब चाहिये, एक गुणात्मक परिवर्तन के लिए , एक समग्र क्रांति के लिए लोगों के दिमाग में भावनायें ऐसी भरी हुयी है, लोग सोच रहे हैं, कि अब बात नहीं करना चाहिये, अब काम करना चाहिये, अब काम करना चाहिये, अब काम करने का समय आ चुका है, और अगर हम इस समय को निकाल देंगे तो पता नहीं आगे, हमारी उम्र घटते जा रही है, ये काम पूरा होगा कि नहीं होगा। इतना काम है, कि हजारों सालों में भी पूरा नहीं किया जा सकता, तो इसे हमें गंवाने से क्या फायदा ? इसलिये काम के जरिये, हर काम से समय को पकड़ के रखो, बांध कर रखो। समय को चूकने मत दो। तभी जाकर ये सारे काम पूरा हो सकता है और तभी जाकर हमारी जो परिवर्तन की चाह है, सपना है, उस सपना को हम साकार कर सकेंगे।

परंतु आज हमने जो व्यवस्था की बात जो सोचा, सपना देखा, एक असीम सुख शांति वाली समाज व्यवस्था का सपना हमने देखा, सभी साथियों ने स्वीकार किया कि उस शांति के लिए क्रांति चाहिए। परंतु क्रांति तभी आयेगी, जब देश के अंदर जो भ्रांतियां चल रही है, वे दूर हो जायेगी। जब तक भ्रांतियां दूर नहीं होगी, तब तक क्रांति हो नहीं सकती, और जब तक क्रांति नहीं होगी, तब तक शांति बनेगी नहीं, शांति हमें मिलेगी नहीं।

भ्रांतियां आज बहुत सारी है। सबसे बड़ा भ्रांति यह है कि, कांग्रेस बदली हो गया, जनता दल आ गया, तो जनमोर्चा आ गया तो भाजपा आ गया और क्या क्या न आ गया। इन्होंने बड़ा सुंदर-सुंदर आश्वासन देना चालू कर दिया और चिकनी चुपड़ी बातें शुरु कर दिया। ''हम ये कर रहे हैं, वो कर रहे हैं'' इन बातों से एक भ्रांति पैदा हो रही है। बहुत सारे वक्ताओं ने इन भ्रांतियों के बारे में बहुत स्पष्ट बातों को रखा।

परंतु एक भ्रांति के बारे में हम बहुत ज्यादा चर्चा नहीं किये। वह भ्रांति है कि सत्ता, जहां पर शक्ति है, वह एक ऐसी सिस्टम, ऐसी व्यवस्था बनानी चाहती है, वह है आंतक या खौफ की बात। वह (सत्ता) सोचती है कि खौफ और आतंक के जरिये हम जनता के अंदर एक ऐसी भावना बनाकर रखेंगे कि सर्व शक्तिमान कोई है, तो वह है खौफ आतंक। तुम मजदूर, तुम अपने मेहनत का दाम मांगते हो ? तुम किसान, सिंचाई का पानी मांगते हो ? तुम विद्यार्थी, तुम संदर पढ़ाई की व्यवस्था मांगते हो ? तुम महिलायें, तुम्हारे उपर अत्याचार हो रहा है, तुम उससे मुक्ति मांगती हो ? यह तो मिलना ही चाहिये। परंतु नहीं मिला, उसके लिए तुम कोई विरोध नहीं कर सकते हो। अगर विरोध करोगे तो ये देखो, हमारे ये वर्दी वाले लोग हैं और वर्दी वालों से पहले तो हमारे सामाजिक लोग हैं (जिनको आप और हम असाजिक कहते हैं, गुण्डा कहते हैं) उन असमाजिक लोगों को वे भेज देते हैं, मारपीट करवाते हैं, गुण्डागर्दी करवाते हैं, अतयाचार करवाते हैं। और उनके जरिये नहीं हुआ तो पुलिस भेजकर, गोली चलवाकर, उन्हें खौफ पैदा करता है, आतंक पैदा करता है, ताकि लोग अपने आगे चलने वाला रास्ता भ्रमित हो जाये और चुपचाप रहे। तो इस बात पर चर्चा नहीं हुई ऐसा नहीं है, चर्चा हुयी है। परंतु हमारे दिमाग में यह स्पष्ट होना चाहिये कि, कोई भी खौफ, कोई भी आतंक हमें दबा नहीं सकता है, हमारे चलने की राह को रोक नहीं सकता है, रोड़ा बनकर पथ में खडा नहीं हो सकता है, अगर खड़ा होता है तो हम एक एक रोड़ा हटाकर आगे बढ़ेंगे।

साथियों, भटकाव आता है। और यह भटकाव आने के समय हमारा दिमाग बहुत साफ होना चाहिये, स्पष्ट होना चाहिये, हमारा विचार परिपक्व होना चाहिये। अगर परिपक्व विचार लेकर हम आगे बढ नहीं पायेंगे तो विशाल अंधकार में कहां हमगुम हो जायेंगे पता नहीं चलेगा।।

दो शब्द

सितम्बर, 1990 – भिलाई औद्योगिक नगरी के निजी उद्योगों के मजदूर हाथों में लाल–हरा झंडे थामे पूंजीवादी शोषण के खिलाफ एक महासंघर्ष छेड़ने की तैयारी में जुटे हुये थे। छत्तीसगढ़ के शोषण मुक्ति संघर्ष 1977 के दल्लीराजहरा के, 1984 के राजनांदगांव के अमर शहीदों के खून सींची राह पर चल रहा था। भिलाई में वह एक व्यापक रुप लेने की तैयारी में था।

2 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ के सारे शोषणों की जड़ भिलाई नगरी में मजदूर किसान महा सम्मेलन अनुष्ठित होने वाला था। यह सम्मेलन असल में पशु शक्ति पर जन शक्ति का, शासक–शोषकों की सत्ता पर लोक सत्ता का एक जबरदस्त प्रदर्शन था।

2 अक्टूबर का कार्यक्रम की तैयारी के लिए सितम्बर 1990 का तीसरा सप्ताह में रायपुर में छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का एक दो दिवसीय कार्यकर्ता शिविर सम्पन्न हुआ था। शिविर में दुर्ग राजनांदगांव, रायपुर, बस्तर, बिलासपुर में फैली हुई मुक्त मोर्चा की सभी शाखाओं क प्रतिनिधियों के अलावा दूसरे सहयोगी संगठनों के कार्यकर्ता भी शामिल रहे।

आज हम जिस लेख को पेश कर रहे हैं वास्तव में वह उस कार्यकर्ता शिविर में का. शंकरगुहा नियोगी का भाषण था। 28 सितंबर 1991 को उनकी वीरतापूर्ण शहादत के बाद, शहीद शंकरगुहा नियोगी यादगार समिति इस भाषण को कैसेट के रुप में प्रसार की और उनकी ही आवाज में उनके विचार छत्तीसगढ़ के लाखों लोगों को संघर्ष की राह दिखाता रहा।

19 दिसम्बर, 1992 को शहीद वीर नारायणसिंह दिवस के अवसर पर, नारायणसिंह के रास्ता पर चलने वाला का. नियोगी के भाषण को लोक साहित्य परिषद पुस्तक के रुप में प्रकाशित कर रहा है, ताकि उनके क्रांतिकारी विचार ज्यादा लोगों तक पहुंच सके।

क्रांति की राह पर विभ्रांतियां आती है, भट काव आता है। भट काव आने के समय हमारा दिमाग बहुत साफ होना चाहिये, स्पष्ट होना चाहिये, हमारा विचार परिपक्व होना चाहिये। अगर परिपक्व विचार लेकर हम आगे बढ़ नहीं पायेंगे, तो विशाल अंधकार में कहां हम गुम हो जायेंगे पता नहीं चलेगा।

नियोगी जी के विचार हमारे विचार को परिपक्व बनाने में मदद करेगा, इसी उम्मीद के साथ...

संपादक
लोक साहित्य परिषद

19 दिसम्बर 1992

साथियों !

कल और आज, दो दिन लगातार बहुत सारे कार्यकर्ता साथी यहा आकर विचार विमर्श किये। और हमारे बहुत साथी, जिन्होंने विचार विमर्श में भाग नहीं लिया, वे भी बहुत ध्यान लगाकर, मन लगाकर इन विचारों को सुनते रहे। सारे विचार, सारे कार्यकर्ता साथियों के विचार ऐसे सुन्दर ढंग से रखा गया, जो जीवन के साथ जुड़ा हुआ सवाल है। आज समाज के जीवन में जो मुद्दायें हैं, असमतायें हैं, विषमतायें हैं, उनको एक-एक करके, फूल के पंखुड़ियों जैसे खोलकर प्रस्फुटित किया गया और चर्चा रुपी हमारा जो बगीचा है, उसको सुशोभित किया गया।

अच्छी-अच्छी बातें हुयी,और इन बातों में मैंने एक सबके मुंह से सुना, वह है हमें परिवर्तन चाहिये। इस व्यवस्था से हम बहुत दुखी हैं और हमें परिवर्तन चाहिए, हमें इंकलाब चाहिये, एक गुणात्मक परिवर्तन के लिए , एक समग्र क्रांति के लिए लोगों के दिमाग में भावनायें ऐसी भरी हुयी है, लोग सोच रहे हैं, कि अब बात नहीं करना चाहिये, अब काम करना चाहिये, अब काम करना चाहिये, अब काम करने का समय आ चुका है, और अगर हम इस समय को निकाल देंगे तो पता नहीं आगे, हमारी उम्र घटते जा रही है, ये काम पूरा होगा कि नहीं होगा। इतना काम है, कि हजारों सालों में भी पूरा नहीं किया जा सकता, तो इसे हमें गंवाने से क्या फायदा ? इसलिये काम के जरिये, हर काम से समय को पकड़ के रखो, बांध कर रखो। समय को चूकने मत दो। तभी जाकर ये सारे काम पूरा हो सकता है और तभी जाकर हमारी जो परिवर्तन की चाह है, सपना है, उस सपना को हम साकार कर सकेंगे।

परंतु आज हमने जो व्यवस्था की बात जो सोचा, सपना देखा, एक असीम सुख शांति वाली समाज व्यवस्था का सपना हमने देखा, सभी साथियों ने स्वीकार किया कि उस शांति के लिए क्रांति चाहिए। परंतु क्रांति तभी आयेगी, जब देश के अंदर जो भ्रांतियां चल रही है, वे दूर हो जायेगी। जब तक भ्रांतियां दूर नहीं होगी, तब तक क्रांति हो नहीं सकती, और जब तक क्रांति नहीं होगी, तब तक शांति बनेगी नहीं, शांति हमें मिलेगी नहीं।

भ्रांतियां आज बहुत सारी है। सबसे बड़ा भ्रांति यह है कि, कांग्रेस बदली हो गया, जनता दल आ गया, तो जनमोर्चा आ गया तो भाजपा आ गया और क्या क्या न आ गया। इन्होंने बड़ा सुंदर-सुंदर आश्वासन देना चालू कर दिया और चिकनी चुपड़ी बातें शुरु कर दिया। ''हम ये कर रहे हैं, वो कर रहे हैं'' इन बातों से एक भ्रांति पैदा हो रही है। बहुत सारे वक्ताओं ने इन भ्रांतियों के बारे में बहुत स्पष्ट बातों को रखा।

परंतु एक भ्रांति के बारे में हम बहुत ज्यादा चर्चा नहीं किये। वह भ्रांति है कि सत्ता, जहां पर शक्ति है, वह एक ऐसी सिस्टम, ऐसी व्यवस्था बनानी चाहती है, वह है आंतक या खौफ की बात। वह (सत्ता) सोचती है कि खौफ और आतंक के जरिये हम जनता के अंदर एक ऐसी भावना बनाकर रखेंगे कि सर्व शक्तिमान कोई है, तो वह है खौफ आतंक। तुम मजदूर, तुम अपने मेहनत का दाम मांगते हो ? तुम किसान, सिंचाई का पानी मांगते हो ? तुम विद्यार्थी, तुम संदर पढ़ाई की व्यवस्था मांगते हो ? तुम महिलायें, तुम्हारे उपर अत्याचार हो रहा है, तुम उससे मुक्ति मांगती हो ? यह तो मिलना ही चाहिये। परंतु नहीं मिला, उसके लिए तुम कोई विरोध नहीं कर सकते हो। अगर विरोध करोगे तो ये देखो, हमारे ये वर्दी वाले लोग हैं और वर्दी वालों से पहले तो हमारे सामाजिक लोग हैं (जिनको आप और हम असाजिक कहते हैं, गुण्डा कहते हैं) उन असमाजिक लोगों को वे भेज देते हैं, मारपीट करवाते हैं, गुण्डागर्दी करवाते हैं, अतयाचार करवाते हैं। और उनके जरिये नहीं हुआ तो पुलिस भेजकर, गोली चलवाकर, उन्हें खौफ पैदा करता है, आतंक पैदा करता है, ताकि लोग अपने आगे चलने वाला रास्ता भ्रमित हो जाये और चुपचाप रहे। तोइस बात पर चर्चा नहीं हुई ऐसा नहीं है, चर्चा हुयी है। परंतु हमारे दिमाग में यह स्पष्ट होना चाहिये कि, कोई भी खौफ, कोई भी आतंक हमें दबा नहीं सकता है, हमारे चलने की राह को रोक नहीं सकता है, रोड़ा बनकर पथ में खड़ा नहीं हो सकता है, अगर खड़ा होता है तो हम एक एक रोड़ा हटाकर आगे बढ़ेंगे।

साथियों, भटकाव आता है। और यह भटकाव आने के समय हमारा दिमाग बहुत साफ होना चाहिये, स्पष्ट होना चाहिये, हमारा विचार परिपक्व होना चाहिये। अगर परिपक्व विचार लेकर हम आगे बढ नहीं पायेंगे तो विशाल अंधकार में कहां हमगुम हो जायेंगे पता नहीं चलेगा।

हमारे पीछे बहुत बड़ा इतिहास है। इतना बड़ा इतिहास है जिसे हम सुनते हैं और जिन्दगी भर सुनते रहेंगे, फिर भी पूरा नहीं होगा वह इतिहास ! हजारों साल का इतिहास है, हमारे देश के हजारों साल का इतिहास है, कितनी कुर्बानियों का इतिहास ! हमारे देश में कितने लोगों ने कुर्बानी दी है – चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, वीर नारायणसिंह, महात्मा गांधी, रामाधीन गोंड़, बस्तर के हमारे मुरिया साथी। इस प्रकार कई लोगों ने कुर्बानी दी है, आजादी का सपना देखा परंतु तथा कथित आजादी मिलने के बाद हम देखते हैं – 1948 में राजनांदगांव में मजदूरों के उपर गोली चली, कांग्रेसियों ने चलाई, बी.एन.सी. मिल के मजदूरों के उपर। अंग्रेजों ने भी बी.एन.सी. मिले मजदूरों के उपर गोली चलवाई थी। 1920 में और आजाद भारत में पहली बार मजदूरों पर गोली चली, वह भी कांग्रेसियों के जमाने में राजनांदगांव में। जनता पार्टी की सरकार बनी, सबसे पहली गोली चली दल्लीराजहरा के मजूदरों के उपर। भाजपा का राज बना तो उन्होंने भी छत्तीसगढ़ की जनता पर गोली चलाई, अभनपुर के मजदूरों के उपर गोली चली। छत्तीसगढ़ के लोग देख रहे हैं कि, अंग्रेज जमाने में सबसे पहली गोली चली राजनांदगांव में, कांग्रेस जमाने में सबसे पहला गोलीकांड राजनांदगांव में हुआ 1948 में, जनता पार्टी जमाने में पहली बार गोली चली छत्तीसगढ़ के दल्लीराजहरा शहर में। जना पार्टी के बाद फिर कांग्रेस आया, उस दौरान भी गोली चली थी पहली बार राजनांदगांव में 1984 में। छत्तीसगढ़ की जनता ने बार बार जिन सपनों को सजोकर रखा था, उन सपनों को पूरा करने के लिए बार बार कोशिश की, भारत में सबसे पहले कोशिश की, और सबसे बड़ी शक्ति के रुप में उभरकर शोषण करने वाले लोगों के खिलाफ आवाज बुलन्द किया। परन्तु खौफ चाहने वाले, आतंक चाहकर जनता को दबाने वाले, शोषण करने वाले लोगों ने छत्तीसगढ़ की जनताओं के उपर बार बार गोली चलाकर उन्हें दबाया। इसलिए आप देखते हैं कि इस के अन्दर आज जो सबसे विकराल समस्या बन रही है – पंजाब तो, कश्मीर तो, आसाम तो, बोड़ो और लिट्टे ! इसके पीछे कारण क्या है ? देश के असम विकास की प्रक्रिया विकास एक प्रकार से नहीं हो पाया। समान विकास नहीं हो पाया, इसलिए इस प्रकार की बातें अलग अलग जगह में विभिन्न रुप में, विभिन्न बातों में विभिन्न समस्याओं के आधार पर सामने निकलते आ रही है।

तो इस समय छत्तीसगढ़ की जनता के सामने जो भी सपनायें हैं, उसको पूरा करने के लिए हमारे शहीदों ने जो कुर्बानी दी, उन कुर्बानियों के खून सींचा रास्ता में चलकर उन शहीदों का सपना हमें पूरा करना होगा। और एक नया छत्तीसगढ़, नया भारत के लिए कल्पना करना होगा यह कल्पना करते समय उसे साकार करने के लिए कार्यक्रम बनाना होगा, उसे अमल करना होगा, इमानदारी पूर्वक अमल करना होगा।

तो यह अमल करने की प्रक्रिया में आप क्या देखते हैं ? मैं बोलना चाहूंगा कि भ्रांति की बात मैंन शुरु की थी, फिर उसी भ्रांति के बारे में आपसे बात करें।

एक मनुष्य या कोई भी जीव हो, उसके अन्दर अगर हम देखें, विज्ञान भी इस बात को बताता है कि, जीवनशील तत्व और मरणशील तत्व, ये दो तत्व हमारे शरीर के अन्दर में हैं, हम जिन्दा हैं फिर भी मरणशील तत्व हमारे अन्दर है। हम जब मृत्यु पा गये मेरा शरीर जब जड़ हो गया, जीवन की शक्ति जब समाप्त हो गयी, तब मरणशील तत्व हमारे उपर पूर्ण रुप से हावी हो गया। जीवनशील तत्व मरणशील तत्वों के बीच में संघर्ष जारी है। जिस समय जीवनशील तत्व ज्यादा ताकतवर है वह आगे बढ़ता है, सपना आगे बढ़ता है। और जिस समय मरणशील तत्व हमारे उपर हावी हो जाता है उस समय हमारे सपने की मृत्यु हो जाती है। तो सपनों को जिन्दा रखने के लिए, हमारे आगे चलने वाले रास्ता को बनाये रखने के लिए सबसे जरुरी है कि मरणशील तत्वों के उपर जीवनशील तत्वों को हावी रहना। भ्रांतियों के उपर क्रांति हावी रहना यह सबसे बड़ा जरुरी है। अगर भ्रांति उपर क्रांति हावी नहीं रह पायेगी, तो जरुर दिखने के लिए हमें दिखेगा कि जीवन है, हमारा शरीर जिन्दा है। परन्तु अगर हमारे सपना की ही मृत्यु हो गयी तो इस जीवन का क्या कीमत है ? हमारे इस जीवन का, हमारे इस समाज के जीवन का, हमारे इस देश के देशवासियों के जीवन का, कोई मतलब निकलना चाहिये, कोई बात निकलनी चाहिये और उस बात को निकालने के लिए एक नया भविष्य की कल्पना हम बार बार करते है।

मैंने पहले ही बताया है कि, छत्तीसगढ़ के लोगों ने अंग्रेज जमाने में पहली कुर्बानी की, कांग्रेस जमाने में पहली कुर्बानी की, कांग्रेस जमाने में पहली कुर्बानी, फिर जनता पार्टी जमाने में, फिर कांग्रेस जमाने में, और फिर भारतीय जनता के जमाने

कुर्बानी का रास्ता शुरु किया। मेरे साथियों, आपसे मेरा निवेदन है कि, जिन अंधकारों के खिलाफ हमारे शहीदों ने कुर्बानी की थी, उन कुर्बानी की बातों को याद करें ! आज भी अंधेरा है रोशनी नहीं आयी है। आपके कदमों को मजबूती के साथ, कार्यक्रम के साथ जोड़कर आपको आगे बढ़ना होगा, एक समय के चूकने से नहीं होगा।

हमारे जीवन में, हम लोगों के जीवन में (मैं सामाजिक कार्यकर्ता साथियों की बात कर रहा हूं आम जनता की बात नहीं कर रहा हूं) एक समस्या मैं बार बार देख रहा हूं। कोई भी तो सुना नहीं है हमारी बाता को... मैं तो बहुत प्रयास किया, लोग हमारी बात को सुनते जरुर हैं, परंतु अमल नहीं करते ''बात तो अड़बड़ चलत हे, परन्तु हमला का करना हे दुनियादारी से।

फिर एक बात पैदा होती है, कार्यकर्ता साथी भी इन बातों से प्रभावित रहते हैं वह बात क्या है ? वह बोलते हैं कि ''पहले तो भाई, अपन परिवार ला देखना है, ओकर बाद में घर ला देखना है, फिर हमर गली ला देखना है, मुहल्ला ला देखना है, गांव ला देखना है, ओकर बाद में, भई हमर तो अतिक शक्ति नहीं है कि, समाज के काम ला करन, फिर देश के बात बहुत बड़े बात हे। तभो ले अगर मौका मिल जाही, तो घलो हाथ बटा देबोन। यह जो विचार है कि, घर से शुरु करेंगे, परिवार से, यह भी एक भ्रांति है। कितने कार्यकर्ता साथी इस भ्रांति में डुबे हुये हैं, इससे निकल नहीं पा रहे हैं। कभी कभी कोई साथी महात्मा गांधी के लेख को पढ़कर उसकी गलत परिभाषा वहां शुरु कर देते हैं – गांव के विकास करते करते गांव तक ही सीमित हो जाते हैं हम यह समझते नहीं है कि जब तक साधारण के साथ विशेष को हम जोड़ नहीं पायेंगे, तो हमारा विशेष मुद्दा तय नहीं हो सकता, जब तक साधारण मुद्दा के साथ उनका रिश्ता न बना लें।

अगर आपके गांव के आस पास एक नदी है और इस नदी में बाढ़ का पानी आ चुका है तो कैसे करेंगे आप ? आपके गांव में पानी घुसेगा। जब आपके गांव में पानी घुसेगा तो क्या होगा ? सारे गांव की झोपड़ियां गिर जाने का डर है। परन्तु आपके गांव के पास के नदी में जब पूरा आ रहा है, पानी आ रहा है, बारिश आ रही है, बाढ़ का पानी आ रहा है तो क्या आसपास के और भी जो गांव हैं, वहां पानी नहीं आयेगा ? वहां पर भी गांव नहीं डुबेगा नहीं ! फिर आपके कैसे अपने गांव को बचा सकते हो ? कैसे आपके घर को

बचा सकते हो ? अगर बादल है, चारों तरफ बादल है बारिश होगी। अगर बादल नहीं है तो बारिश नहीं होगी, आपके गांव में भी नहीं होगी, दूसरे गांव में भी नहीं होगी, देश में बारिश नहीं होगी तो आपके गांव में भी नहीं होगी, देश में होगी तो आपके गांव में, आपके गांव में सब खुशहाल हो जायेंगे। विशेष से साधारण, साधारण से विशेष में आना होगा। परन्तु उल्टा विचार जो गांव केउपर आधारित करके, कहीं पर कोई दूसरे मुद्दों पर या दूसरे समूहों के उपर आधारित करके इन बातों को रखा जाता है। हमें इन भ्रांतियों से मुक्ति मिलना चाहिये।

इसलिये एक और छोटी से या बहुत बड़ी, सबसे बड़ी भ्रांति की बात यहां आपके सामने रखूंगा। वह है क्या ? नियति के उपर में एक भ्रांति है.... दो बातें हैं एक बात है ''नियति'' दूसरी बात है स्थिति। नियति और स्थिति एकदम विपरीत दिशा में दोनो बात चले थे। हमर छ त्तीसगढ़ के कार्यकर्ता साथियों के सामने ये बात बार बार आती है, नियति की बात बार बार आती है। इसलिये नियति की बात, स्थिति की बात स्पष्ट होनी चाहिये। जैसे हमेशा हमारी बहने बोलती है कि पुरुष महिला के उपर ज्यादती करता है और कई महिलायें नियति बोल कर मान लेती है। ये स्थिति और नियति के बीच, नियति जड़ है, उसमें जीवन नहीं है, मरणशील तत्व उने उपर हावी है, जीवनशील तत्व वहां पर नहीं है। इसलिए स्थिति आज की परिस्थिति क्या है, इस परिस्थिति से अगली परिस्थिति क्या होगी, इस अगली परिस्थिति में हम कैसे जायेंगे, आगे बढ़ेंगे – इस पर हमारा विश्वास जमना चाहिये, इस पर हमारा तर्क जमना चाहिये, इसके उपर हमारा विचार जमना चाहिये। जब तक इस पर हमारा तर्क और विचार नहीं जमेगा, तब आज की स्थिति से, परिस्थिति से मुक्ति नहीं होगी। और नियति माने स्थिर, नियति माने मृत्यु, नियति माने जड़। परन्तु जो मर जाता है, उसका कोई परवाह नहीं। मैं मर जाउंगा तो मेरी लाश यहां पड़ी रहेगी। जब मेरी लाश यहां पड़ी रहेगी मरने के बाद इतनी बदबू आयेगी साहब कि इस मोहल्ला वाले कोई नहीं रह सकते। तो इसलिये क्योंकि नियति पर मृत्यु हावी है जो व्यक्ति जिन समूहों ने नियति पर विश्वास कर चुका है वह उसके लिए समस्या नहीं है, परन्तु उसके आस पास रहने वालो के लिए बहुत बड़ी समस्या है। जिन पर मरणशील तत्व हावी है, उन पर नियति बहुत बड़ी हावी हो गयी है इस समय जीवनशील तत्वों का मरणशील तत्वों पर हावी होना जरुरी है। जहां पर शोषण है,

अत्याचार है, अन्याय है, वहां पर मरणशील तत्व हावी है और जहां पर लड़ाई है, संघर्ष है, आगे बढ़ने की तमन्ना है, आशा है, उम्मीद है वहां पर जीवनशील तत्व हावी है, वह कदम कदम कूच करता है, आगे बढ़ता है एक दिन वह विजय की मंजिल में जाकर पहुंचता है।

तो साथियों, इतनी बातों पर चर्चा करते समय, इन भ्रांतियों के बारे में विचार करने के बाद हम विशेष रुप से, आज छत्तीसगढ़ की जनता जिन तकलीफों में दिन बिता रही है, उनकी चर्चा होनी चाहिये। जिन विचारों से आकर फिर से भ्रांति जमाने की कोशिश हो रही है, उन विचारों पर साफ साफ तौर पर चर्चा होनी चाहिये।

एक तरफ आपके सामने सवाल आया जमीन का, आज इस इलाका की जमीन की समस्या के बारे में बात चीत करुं, मैं ज्यादा बात नहीं करुंगा, फिर भी थोड़ी सी बात मुझकों बोलना उचित लगता है। दुर्ग शहर में जायेंगे तो राजनांदगांव का मेम्बर आफ पार्लियामेंट, संसद सदस्य है, सारे दुर्ग की सारी जमीन उसके कब्जे में है। दुर्ग के कलेक्टर मि. ढांड उस दिन मुझकों बोल रहे थे कि एक दिन मि. धर्मपाल गुप्ता आकर उनको बताया जो कि कलेक्टरेट हैं, कलेक्टर महोदय का जो बंगला है वे भी उनके पूर्वजों की जमीन पर है। एसी कोई जमीन बाकी नहीं है जो धर्मपाल गुप्ता के पास नहीं है। धर्मपाल गुप्ता भाजपा के बहुत बड़े नेता हैं, उसके पहले दूसरी पार्टी में था, बदली करके वह इस पार्टी में आया है। सारी दुर्ग की जमीन उसे कब्जे में है। हमारा जूदेव साहब है राजा महाराजा जी। और उसके पास कितनी सी जमीन है, आप लोग जो उनके इलाके से आये हैं, अच्छी तरह से बता सकते हैं – हजारों एकड़ जमीन उनके पास है औरर कुछ ऐसी मठ हैं, जैसे नादिया के मठ के बारे में आपने सुना होगा, तो ऐसे बहुत सारे मठ हैं बनखेड़ा का मठ है, भद्राचलम का मठ है और इन मठों के नाम से बहुत सारी जमीन है। मैंने सुना कि कहीं पर कुत्ता और बिल्ली नाम से भी जमीन रखा है, क्योंकि सीलिंग एक्ट से बचना है जो बच्चा पैदा भी नहीं हुआ उनके नाम से भी जमीन है क्योंकि एक बच्चा पैदा होने वाला है, आने के बाद कहां जायेगा बेचारा ? तो जमीन की हालत इतने खतरनाक ढंग से है। देश के अंदर जो अच्छी जमीन है और विशेष रुप से शहर के किनारे जो जमीन है, शहर हर एक शहर चाहे दुर्ग शहर, चाहे राजनांदगांव शहर, चाहे रायपुर

शहर, चाहे बिलासपुर शहर, कोई भी आस पास के शहर में देखेंगे कि आजकल वहां पर एग्रीकल्चरल फार्म है। वहां देखेंगे कि कहीं पर गन्ना लगा हुआ है, कहीं कुछ लगा हुआ है और हर प्रकार की फसल वहां हो रही है, छोटा मोटा फल फ्रुट का दुकान भी इनके सामने आपको मिल जायेगा। ये तो फार्म हाऊस की बात है। हमारे यहां सबसे बड़ा नेता रायपुर शहर का विद्याचरण जी शुक्ला, उनका फार्म हाऊस अगर आप देखेंगे तो आपके दिल दिमाग बिलकुल खुश हो जायेगा कि ऐसा कोई भी है। तो इस फार्म का चक्कर भी बहुत बड़ी बात है। और जमीन के जो मालिक हैं एक भी व्यक्ति कभी नांगर (लांगल) का मुट्ठा नहीं पकड़े है, वह जानता नहीं है, उनमें कोई भी जानता नहीं है और फिर रायपुर शहर में – जिनकी जमीन बेमेतरा में है, कवर्धा में है, राजनांदगांव में है, फलां जगह में है वे सब कहते हैं रायपुर शहर में, एक विशेष पाड़ा के अन्दर। मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहूंगा, नाम लेने से किसी के दिल में भी चोट लग सकती है। वे सारे जमींदार छत्तीसगढ़ के कोने कोने में भरे हुए हैं और कैसे कमाई होती है वहां से, वह भी आप लोगों को कुछ न कुछ खबर रखना है।

यह जो जमीन का सवाल है, हमारे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इन सवालों को बार बार गांव गांव जाकर उठाया। परन्तु एक बात उन्होंने आज तक ख्याल नहीं किया वह बात कि इन जमीन पुत्रों की भी एक आवाज, नारा पैदा हुई है ''छत्तीसगढ़ छत्तीसगढ़ियों का, नहीं किसी के बाप का''। अब ये छत्तीसगढ़िया कौन है भैय्या ? ये हमर जतका गांव में, रायपुर शहर में रहिथे और हमर जूदेव महाराजा है, धर्मपाल गुप्ता जी जेकर पास में ढाई तीन हजार एकड़ है, इही मन छत्तीसगढ़िया है ? ये छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़िया के मतलब का होथे ? और ये छत्तीसगढ़िया और छत्तीसगढ़िया नोहे ये दोनों के अन्दर में झगड़ा करो ! एक तो है कि, एक मजदूर परिवार है, जैसे हमर संगवारी हा बताइस अच्छा ढंग से बताइस – हमर एक जात हे, हमको वह बात ला जात के रुप में बोलना चाहिये, बिरादरी के रुप में बोलना चाहिये। मैं स्पष्ट रुप से बता दूं कि एक जात है, एक गोत्र है, दुनिया के अन्दर दो गोत्र हैं। एक है बघवा गोतियार और एक है आदमी गोतियार। लहू पीवैया मन के जात हे बघवा गोतियार और जो मेहनत करके खाथे, मजदूर मन, ओ मन आदमी गोतियार, मनखे गोतियार। उस गोतियार के अन्दर फर्क करने के लिए, विभेद बोने के लिए उन्होंने इस तरह का नारा कहीं न कहीं उठाता है।

हम भी एक नारा देते हैं, हम अपना नारा बाद में बतायेंगे।

परन्तु इसके साथ दूसरी बात भी आपके सामने रखना चाहूंगा। औद्योगिक क्षेत्र के अन्दर, मजदूर इलाका में हम क्या देखते हैं ? कि वहां पर जैसे भिलाई, राजनांदगांव दल्लीराजहरा, कोरबा, हिर्री, नंदनि, बैलाडीला, अभनपुर वगैरह के मजदूर इलाका में सिर्फ एक ही बात की साफ चर्चा है कि हमारी फलां मांग पूरी होनी चाहिये। दो मांग हमारी बहुत पापुलर मांग है एक वेतन में बढ़ोत्तरी करो, दूसरी बोनस दो ! इंकलाब जिन्दाबाद ! ये कर मतलब ? परिवर्तन, गुणात्मक परिवर्तन, क्रांति इंकलाब। उर्दू में इंकलाब कथे और हिन्दी में ओला क्रांति कथे। मतलब गुणात्मक परिवर्तन और का मांग चलथे, कि 10 प्रतिशत बोनस देना होगा, देना होगा। तो 10 प्रतिशत बोनस मिले के बाद हमर देश के अन्दर में गुणात्मक परिवर्तन आ जाही ? मजदूर जो है, वो कोई मालिक बन जाही ? जो लूट खसोट करैया हे वो गरीब आदमी बन जाही ? वेतन बढ़ोत्तरी के बाद हमर सारे दुख हट जाही ? आज ट्रेड युनियन के पास सिर्फ ये मुद्दा बचा हुआ। – वेतन में बढ़ोत्तरी करो और दूसरा बोनस ! छत्तीसगढ़ में हमन ओला भुनस कथन और भुनस बोल देबोन तह. ले हमर दिल अईसन खुश हो जाथे और एक आध परसेंट (प्रतिशत) बढ़ गीस ते ठीक हे । अगर दस बीस रुपया चंदा देना हो तो फटाफट कर देबोन। अच्छा काम करहे हमर नेता मन जी, एक परसेंट बढ़ाके लान दीस। बोनस तो हमर बढ़ गीस, बस हमर क्रांति होगे और साल भर ट्रेड युनियन का बूता करही ? साल भर एकठन बूता करही वो हे चार्ज शीट के जवाब देना। चार्ज शीट मालिक मन थमाही "यु तुम काम नहीं करते हो जी। काम नहीं करते हो, भाग जाओ" तो मालिक ओला चार्जशीट दे दीही, तो मजदूर चार्ज शीट ले लीही और लेए के बाद नेता के पास में आ जही – "देखो जी ऐसे ऐसे लिखके देहे कि 72 घंटा में जवाब देना है... 24 घंटा में जवाब देना है। अब 24 घंटा, 72 घंटा, तीन दिन, 7 दिन जवाब हम बैठे बैठ देन, मजदूर कौन से झोपड़ी में रथे, मजदूर के उस इलाका में अस्पताल की सुविधा है कि नहीं, मजदूर के लईका कौन से विचार लेके चलही – वो विडियो और ब्लू फिल्म देख के ढुसूम ढासम अमिताब बच्चन करत रही ये बात करही कि दूसरा बात करही, ये बात के उपर में ध्यान हमर ट्रेड युनियन के नेता मन में है कि नहीं ! मजदूर शराब पीकर पड़े हे गली गली में, परन्तु ये कौन देखेगा ?

मजदूर जहां पे है, कहां से आये हे वो मजदूर ? वो गांव से आये हे, वो भूमि हीन बन के, गांव के मजदूर जो शहर में आके मजदूर बनेहे, उद्योग में काम करथे। ओकर सगामन गांव मा रथे, रिश्तेदार गांव में रथे, उसके रिश्तेदार के साथ उसका रिश्ता है कि टूट चुका है इस पर ध्यान ट्रेड युनियन नेता देता है कि नहीं देता है ?

इससे बड़ी और एक खतरनाक बात होती है – जो मजदूरों के उपर होती है, देश के उपर होती है, सिर्फ मजदूरों के ऊपर ही नहीं। उत्पादन व्यवस्था में कौन सा तकनीकी जारी रही ? वो तकनीकी इस देश के सुधार के लिए है या देश के लिए खतरनाक ? वो मशीन हमर देश के फायदा के लिए है कि नहीं है ? भिलाई में एक मशीन है उसका नाम है आई.बी.एम. गिनती मशीन, करीब पच्चीस तीस करोड़ रुपये कीमत हे ओकर, एक दिन वो मशीन के एकठन छोटा सा पुरजा बिगड़गे। मशीन गिनती बहुत फटाफट लगाथे अतिक जल्दी गिनती लगाथे कि तुम सोच नहीं सको ? एक सेकेण्ड के कई हिस्सा में गिनती कर देही। अब जैसे वह कम्प्यूटर के एक ठन स्क्रू ढीला होगे, तो वो मशीन के दिमाग घलो खराब होगे। अब जब दिमाग खराब होगे, तब वो हा उल्टा पुल्टा लिखथे, हमला उल्टा पुल्टा बतावथे। हम जानत हन दो गुण दो कतिक होथे, हम जानत हन दो गुणा दो चार होथे। पर वो हा का लिखथे ? अस्सी लिखथे। ऐसे दिमाग घलो खराब होगे वोकर। तो अफसर मन अमेरिका के कम्पनी ला बोलिन ''भाई तुम्हारा मशीन के दिमाग खराब होगे, ये पार्ट्स ला बदली कर दो'' वोमन (कम्पनी) बोलिन ''ये तो पुराना माडल की बात है। अब तो नया माडल है जिसका कीमत है पचास करोड़ रुपया, तुमको लेना हो तो ले लो। वो (पुराना) मशीन ला फेक दो। वो स्पेयर पार्ट्स हमर देश में नहीं है। नहीं चलता अमेरिका में वो पुराना जमाना का माडल, अब जाओ, ओकर दिमाग के एकठन स्क्रू के खातिर वोकर दिमाग खराब होगे तो 30 करोड़ रुपया पानी में बोहागे। 30 करोड़ रुपया फालतू चले गये। आज यहां मैनेजमेंट के लोग इस प्रकार के तकलीफ का आयात कर रहे हैं औद देश द्रोहिता कर रहे हैं। उन दिनों जनता दल के कुछ नेताओं से (जो आज मंत्री पद में है) मैं व्यक्तिगत रुप में चर्चा किया था, उन्होंने बताया था कि इस प्रकार से (बहु राष्ट्रीय) कम्पनी हमारे देश को खा रही है, लूट रही है। परन्तु आज सत्ता में जाने के बाद उन्होंने इस बात को भूल गया। आज जो नयी औद्योगिक नीति के तहत आ रही है, पता नहीं क्या औद्योगिक नीति, परन्तु राजीरव गांधी की जो

औद्योगिक नीति थी, तकनीक के बारे में उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, वह नीति आज भी जारी है, जोरदार जारी है। रावघाट का नाम सुने हो, बस्तर से बहिनी मन आये हो, रावघाट हमर इहां हे, बस्तर के बीच में, रावघाट में लोहा पत्थर हे, जो भिलाई में आने वाला हे, पर्यावरण मंत्री है एकझन मेनका गांधी, वोकर नाम से भिलाई के बहुत से अफसर मन गुस्सा में है, कि वो (रावघाट परियोजना को) पास नहीं करथे, एकर खातिर आगे बढ़े बर नहीं सकथे, नहीं बन सकथे। वोमन जोर शोर से लगे हे कि वो पास हो जाना चाहिये। आप मन तो गये नहीं हो, रावघाट देखे नहीं हो, आप मन ला मालूम नहीं है, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, कोरिया और जापान, ये पांच देश के लोग रावघाट में आज डेरा डाल के बैठे हैं और एक इंटरनेशनल, याने कि अंतराष्ट्रीय पैमाने में ओकर ठेका होने वाला है वहां पे कौन प्रक्रिया के मशीनीकरण होही, तकनीक लागू होही, कौन तकनीक के जरिये वो वहां पे लोहा पत्थर उठाही, निकाले जाही और भिलाई कारखान में लाये जही – ओकर बारे में सारे दुनिया ला मालूम है। हम बस्तर के आदमी मन, छत्तीसगढ़ आदमी मन रावघाट ला देखे नहीं हन और ये आस्ट्रेलिया वाले मन, कनाडा वाले मन, कोरिया वाले मन, जापान वाले मन, ये सब मन देख डारिन हे।

एक अफसर से मोर बात होवत रिहिस है। मैं उनको बुलाया, बताया ''भई, मशीनीकरण के बाद में ये कस्ट आफ प्रोडक्शन – उत्पादन लागत कम होना चाहिये, तुम लोग बार – बार बोलते हो। परंतु गलत बात बोलते हो, गलत आंकड़े पेश करते हो। असली में मशीन का दिमाग जो खराब हो जाता है, उसकी बात तुम लोग कभी सोचते नहीं हो। तुम जो बात को रखते हो, उससे कई गुणा ज्यादा डिप्रिशियेसन होता है ''तकनीक मेनुअल, मानवीय शक्ति से जो काम होता है हमारे देश में वह सबसे बढ़िया किस्म का है। उसमें उत्पादन लागत भी कम है। क्वालिटी में आगे है। बैलाडीला के माल दस साल तक मेनुवल प्रोसेस, मानवीय खदान से लिया है। मनुष्य जो काम करता है, उसकी क्वालिटी में कोई फर्क, कोई कमी नहीं है, मशीन से अच्छा माल हम देते हैं इसका प्रमाण है कोयला। जब कोयला खदानों का मशीनीकरण नहीं हुआ था, मशीनीकरण इतना तेजी से नहीं आया, तब कोयले की क्वालिटी इतनी खराब नहीं थी, अभी जितनी खराब हो गयी है, फिर कनीक की बात तुम लोग क्यों करते हो ? तुम लोग बोलो कि 'गहम मशीन की बात करते हैं। तकनीक और मशीन दो अलग अलग बात हैं और

तकनीक ऐसा है कि, जिस तकनीक में तुम घुस गये हो, उसमें अभिमन्यु जैसे तुम घुस सकते हो, परंतु उससे निकलने का रास्ता तुमको मालूम नहीं है। इसलिए अभिमन्यु को जो हाल होता है, मृत्यु होती है, उस प्रकार तुम देश की जनता के करोड़ों रुपये की मृत्यु यानि हत्या कर रहे हो, देश की जनता के करोड़ों रुपये की मृत्यु यानि हत्या कर रहे हो, देश की जनता के विश्वास की तुम हत्या कर हो। इंसान की जरुरत की तुम हत्या कर रहे हो और देश के लिए एक नया समस्या पैदा कर रहे हो। तुम मरणशील तत्वों को हावी कर रहे हो, तुम जीवनशील तत्वों के उपर चक्कू चला रहे हो, तलवार चला रहे हो (इन सवालों के) जवाब देने वाले कोई शक्ति, कोई विचार मैं देखा नहीं हूं

दो बात आयी, दो मुद्दा आया, छत्तीसगढ़ के पैमाने में, साफ–साफ। बहुत सारे मुद्दा हैं, परंतु साधारण रुप से दो मुद्दा आपके सामने हैं – एक है जमीन का सवाल और दुसरा मुद्दा आपके सामने मशीनीकरण का सवाल। अब ये जमीन और मशीनीकरण दो बात के बारे में, औद्योगिक नीति के बारे में आपका दिमाग साफ होना चाहिए। आपका दिमाग में कोई भ्रांति नहीं होना चाहिये। धरती पुत्रों की राजनीति, जमीन से जुड़ी हुयी एक बात ''छत्तीसगढ़ियों का और जो छत्तीसगढ़ियों नहीं होही, ओकर मुड़ फोड़े का'' ये बात को भी आपको घृणा करना चाहिये। और दूसरी, सिर्फ अर्थनीतिवाद, सिर्फ आर्थिक मुद्दों पर ट्रेड युनियन की बात को ले जाना, इसको भी आपको घृणा करना चाहिये।

ये दो राजनीति की बात है। सी.पी.एम., सी.पी.आई. के लोग लगातार इस बात को लेकर चल रहे हैं, मजदूर बेल्ट में काम कर रहे हैं और कांग्रेस बी.जे.पी. उसके साथ में है और दूसरी ओर जो नयी किस्म की शक्ति है, वह जनता के अन्दर विभेद लाने के लिए, एकता को तोड़ने के लिए, जनता की आवाज को खत्म करने के लिए, नाश करने के लिए फूट की राजनीति बोता है। फूट की राजनीति जो बोता है, उसकी बातों को भी आपको घृणा करनी चाहिये। फिर नई बात क्या है ? घृणा तो करेंगे भई, फिर विकल्प क्या है ? हम सब कहेंगे एक आवाज से ''लुटेरों की जागीर नहीं, छत्तीसगढ़ हमारा है''।

लुटेरों की जागीर नहीं, शोषकों की जागीर नहीं, छत्तीसगढ़ किसका है ? हमारा है ! हमारा है छत्तीसगढ़, मजदूरों का, किसानों का, मेहनतकशों का, इमानदारों

का, देशप्रेमियों का, और बाकी लोग, तुम्हारा नहीं है। बताओ जी, तुम्हारी जमीन है, तुम कहां के छत्तीसगढ़िया हो ? तुम तो खुन पिवैया हो, मनखे के लहू पिवैया, तुम नहीं हो छत्तीसगढ़िया ! छत्तीसगढ़िया मन मनखे के लहू नई पिये। इंसान के लहू नहीं पीता है छत्तीसगढ़िया लोग। मेहनतकश, देशप्रेमी किसी का खून नहीं पीता है। तो तुम्हारा छत्तीसगढ़ जब है, वो हमारा नहीं है और हमारा छत्तीसगढ़ जब है तो तुम्हारा नहीं है। ये दोनों के अन्दर बहुत बड़ी स्पष्ट विभेद रेखा है इसलिए उनका उस नारा को, जो एकता को तोड़ने वाला नारा है, हम नहीं लगाते हैं। हम नया छत्तीसगढ़ की बात करते हैं ''लुटेरों की जागीर नहीं, छत्तीसगढ़ हमारा है'' यह नारा लगाते हैं।

और सिर्फ आर्थिक मांग नहीं, तकनीक की बात करो। आज उद्योग में कौन सा रुप में उत्पादन होगा, उसकी बात करो। आज भिलाई के अंदर से मजदूर साथी मन आये हैं, मेरे सामने की बात है, जब मैं भिलाई में एक मजदूर था उस सिम्पलेक्स कम्पनी के पास सिर्फ दो लेथ मशीन था। उसके बाद देखता हूं, आज सिम्पलेक्स के पास में इतनाइतना पूंजी है इतना पूंजी है ! अरब रुपये का पूंजी, वह चीन के साथ मिलकर बैलाडीला के पास एक स्पंज आयरन कारखाना बनाने वाला है, जिसमें डेढ़ सौ करोड़ रुपये से भी ज्यादा पैसा लगने वाले हैं। मेरे सामने, मैंने देखा, आज से पच्चीस तीस साल पहले देखा कि सिर्फ दो लेथ मशीन था और आज उसे पास एक लोहा कारखाना। इस्पात कारखाना लगाने की ताकत आ गयी। भिलाई में कारखाना है, अहमदाबाद में कारखाना है, फलां जगह में कारखाना है, दूसरे तरफ बी.के. कम्पनी आपके सामने है, चंडीगढ़ में बिल्डिंग का ठेका बी.के. कम्पनी का, बंगलूर में बिल्डिंग ठेका है बी.के.कम्पनी का, भोपाल में बिल्डिंग ठेका, बोकारो, दुर्गापुर राउरकेला में बिल्डिंग का ठेका – बी.के. कम्पनी का, देश के अन्दर दो बड़े बिल्डिंग का ठेकेदार हैं – एक एशियाड बनाने वाला और दूसरी बी.के. कम्पनी बक्तयार सिंह की। हम जानते हैं कि यह सेक्टर 4 में जब ठेका लिया था उस समय उसे पास कुछ नहीं था। पेटी ठेकेदारी के नामसे उसका काम शुरु हुआ था। पेटी ठेकेदार अब देश का सबसे बड़ा ठेकेदार हो गया। आपे भिलाई में पैदा हुये इंदरचंद जैन है, मूलचंद जैन है, यहां के उद्योग पति, कुवैत में गया ठेका लेने के लिए, वहां पर पाइप लाइन बिछाने की बात थी। यहां के ठेकेदार लोग पुराना पादप में रंग लगा दिया और उसे नया बोलकर चला दिये और वहां पर जब पकड़े गये तो काजी के पास

पेश हुये। काजी के पास में जब मूलचंद जैन पेश हुये तो काजी ने हुक्म कर दी ''उसके दोनो हाथ काट दो''। कुवैत में ऐसा ही इस्लामी कानून है। जब ये बात होगे तो भारत के हमर वहां एमबैसी है, आमन बहुत मुश्किल करके, उसे बोरी में भर दिया और सिल सिला के, समान बोल के उसको हवाई जहाज में भर के यहां तक पहुंचाया। यहां के ठेकेदार कुवैत तक पहुंच गया है, आप ही बताइये, कितना पैसा कमाया इन्होंने ?

जमीन के सवाल के उपर, उद्योग व उद्योगपतियों के सवाल के उपर अगर हमारी बात स्पष्ट हो जाये, तो गलत विचारधारा, भ्रांतियों की बात, मरणशील तत्वों के विचार से हमें मुक्ति हो जायेगी। और मरणशील तत्व से मुक्ति हमारी जब हो जायेगी, तो जीवनशील तत्व हावी होगा, शहीदों की विचारधारा आगे बढ़ेगी, मुक्ति का रास्ता प्रबल होगा।

मैं बहुत समय लेते जा रहा हूं, फिर भी कुछ जरुरी बात मैं करना चाहूंगा। दो मुद्दा की राजनीति को समझने के बाद हमें हमारा कार्यक्रम बनाना होगा। कार्यक्रम बनाते समय आपको कुछ बातों का ख्याल रखना होगा।

शक्ति किसके पास है ? शक्ति दो जगह में है, आप बोलेगें कहां, कहां, कैसे दो जगह में हो सकती है, एक ही जगह में होनी चाहिये ? नहीं ! दो जगह में है। एक है पशु शक्ति, पशु शक्ति सत्ता में है, जो सत्ता आपको दिखती है, जो आपके उपर शासन करती है। और दूसरी जगह में एक शक्ति है जन सत्ता। पशु सत्ता और जन सत्ता ये दो जगह में आज शक्ति है। जहां पर जन सत्ता कमजोर है वहां पर मरणशील तत्व हावी है, जीवनशील तत्व वहां पर मार खाता है। और जहां पर जनसत्ता हावी है, वहां पर पशु शक्ति, मरणशील तत्व गिड़गिड़ाते हैं। छत्तीसगढ़ में गोठिया थे कि बरपेली के बात है। बरपेली एक शब्द है। अगर तोर बरपेली चल जाही, तो मोर बरपेली नई चल सके, और मोर बरपेली अगर नई चल सकही तो मरणशील तत्व हमर उपर हावी हो जाही। मृत्यु हमर उपर हावी हो जाही, जीवन हमर से दूर हो जाही, उम्मीद और आशा हमर से दूर हो जाही, सपन के मृत्यु हो जाही। तो इसलिय संगवारी, ये बरपेली प्रतिष्ठा करने की बात है, सत्ता की प्रतिष्ठा करने की बात है, जनसत्ता की प्रतिष्ठा करने की बात है। ये जनसत्ता प्रतिष्ठा करके उपाय, ताकत सोचेबर लगही।

हमर संगवारी मन आये है, कई जगह से। एक साथी जो हमर मोगरा इलाका में काम करथे समाजिक कार्यकर्ता के रुप में, जब वोहा कवर्धा में जाके वहां के जंगलवाले के खिलाफ में भूख हड़ताल करिस, त ओला नक्सलाईट बोल के गिरफ्तार कर लिस। संविधान में ये बात कहीं पे नहीं हे कि कोई ला तुम (नक्सलाईट बोल के) जान से मार सकथो, कोई ला जबरदस्ती जेल में बंद कर सकथो, और हमर सामाजिक कार्यकर्ता के बारे में ये बात लागू ही नहीं होती, क्योंकि मैं व्यक्तिगत रुप से जानता हूं कि वह नक्सलाईट नहीं है, उस विचार के आस पास नहीं है तो क्यों उसको नक्सलाईट बोलकर गिरफ्तार किया जाता है ? क्यों ? इसलिये कि उस इलाका में मरणशील तत्व हावी है, जीवनशील तत्व वहां पर कोई जगह दिखता नहीं है, वहां पर संगठन नहीं है, एकता नहीं है, जनसत्ता आज प्रतिष्ठित नहीं हो पायी है गांव गांव में। छत्तीसगढ़ के इलाका में आज भी जनसत्ता प्रतिष्ठित नहीं हो पायी, कोई कोई जगह में टीम टीम जल रही है, दीपक जैसी। जनसत्ता को स्थापित करना होगा, लोकसत्ता को स्थापित करना होगा। लोकसत्ता को जब तक स्थापित नहीं करेंगे, हमारा साथी गिरफ्तार होते रहेगा

मैंने एक बार एस.पी. साहब से बोला था कि वह साथी ला गिरफ्तार किया है, जो ठीक है ! सामाजिक कार्यकर्ता कोई भी गांव जाकर, कोई भी जंगल जाकर अगर जंगल वालों के खिलाफ बात करेगा, तो तुम उसको नक्सलाइट बोलकर गिरफ्तार कर लोगे ? छत्तीसगढ़ में किसी को नक्सलाइट बोलकर गिरफ्तार करना इतनी आसान बात नहीं है अगर जंगलवालों का अत्याचार है, तो उस समय जंगलवालों के उपर जनसत्ता हावी होगी। छत्तीसगढ़ में ऐसी जनशक्ति पैदा हो रही है, कवर्धा में पैदा हो रही है, चौकी में पैदा हो रही है, नारायणपुर में पैदा हो रही है, कोंडागांव में पैदा हो रही है, कांकेर में पैदा हो रही है, सरगुजा और रायगढ़ में पैदा हो रही है, भिलाई और दल्लीराजहरा राजनांदगांव और कोरबा के मजदूर इलाके में पैदा हो रही है। जनसत्ता स्थापित होते जा रही , हावी होने जा रही है। इसलिये कोई फिक्र की बात नहीं है, एस.पी. साहब तुम इस प्रकार के और एक दो घटनायें होने दो, फिर देखना, कैसे नक्सलाइट होता है और नक्सलाइट क्या काम करता है। जब नदी से पूरा का पानी निकलेगा, जब बाढ़ आयेगा, कूड़ा कचरा सब साफ हो जायेगा, कुछ छुटेगा नहीं और जब नदी का पानी आयेगा, उस समय तुम मत रोना कि, हमने गलती कर ली थी, एक सामाजिक कार्यकर्ता को

नक्सलाइट बोलकर बंद कर दिया था। उस समय रोने से कुछ फायदा नहीं होगा।

परंतु हमें इतना सुनने से खुशी नहीं होना चाहिये। वो नदी के पानी बारिश के दिन में आके चल दीही। ओकर बाद में कहा जाही ? समुद्र में चल दीही, फिर हमर नदी सूखा हो जाही। ये पानी ला रोके के बात भी सोचना चाहिये। इस पानी को रोकना होगा, कैसे रोकेंगे आप ? बांध बनाना होगा, एकता बनाना होगा, तब जाकर रुकेगा। मजदूर किसान बुद्धिजीवी देशप्रेमी इनकी एक एकता बनाना होगा, तब यह शक्ति, जनशक्ति, नदी का पानी रुक सकता है। और इस काम को आप लोग कर रहे हो, परंतु और मुस्तैदी से करना होगा और तेजी से करना होगा, हिम्मत के साथ करना होगा, बहादुरी के साथ करना होगा। हमारे भगतसिंह से लेकर रामाधीन गोंड़, रामाधीन गोंड़ से अभनपुर के रमेश परीड़ा, कुर्बानी की उन्होंने, उन्होंने नहीं डरा। आज इसलिये लोकसत्ता स्थापित होने जा रही है। कोई भी आयेगा तोड़ फोड़ आतंकवाद लेकर चाहे साम्प्रादयिकता के नाम पर हो, चाहे जात के नाम पर हो, चाहे पात के नाम पर हो, कोई फूट कराने वालों को हम फूट करने नहीं देंगे। प्रण है हमारा, आप सबका प्रण है, हम फूट के बीज बोयेंगे आज जो पानी आने वाला है, चल रहा है, अभी बीच बीच में दिखता है बारिश में, हम जब तेजी से काम करेंगे तो वह पानी और ज्यादा दिखेगा। हमें इस पानी को रोकना होगा और जहां पर जरुरत है – कवर्धा में अत्याचार हो रहा है तो रायपुर में स्वीच दब जायेगा, लोकसत्ता कवर्धा में पहुंच जायेगी और कहेगी ''अरे देखो'' हम हजारों की तादाद में हैं, पशु शक्ति का मुकाबला करने के लिए हम पहुंच चुके हैं, कौन है पशु शक्ति ? आओ जनसत्ता का मुकाबला करो, लोकसत्ता का मुकाबला करो।

कपड़ा फरिया हैं ये गुंडे, देखना। खेती के अंदर किसान एक फरिया टांग देता है तो, जितने चिड़ियां, पछि या सोचती है यह कोई आदमी होगा, तो बेचारे नहीं आती। मगर कोई चिरई आ गये तो का होही ? चिरई का कुछ नहीं होय, फरिया तो खुदे हिलत हे। वो आके खा–खुई के चल देथे। तो ऐसे ही (फरिया जैसे) हैं वर्दी वाले मन, आतंक और खौफ दिखाने वाले गुंडा लोग।

जब मैं भूख हड़ताल में बैठा था अभी अभी वहां पर ए.सी.सी. के सामने, उस समय गुंडा मुझको मारने वाले थे। कलेक्टर एवं ए.सी.पी. तक ने बताया कि

नियोगीजी, आप वहां पर मत जाना, आपकी जान के उपर खतरा है'' कई साथियों को मालूम है कि इसके पहले भी गुंडा लोग हमारे कई साथियों के उपर लाठी बरसाये थे। मैंने बोला, ठीक है, मरना तो है कौन आया है अमर होकर यह दुनियां मं ? कोई नहीं आया, इसलिये मरना तो है ही, कल भी मरना है, आज भी मरना है, और अपनी उमर तो काफी हो गई है, हमर देश के औसत उपर करीब करीब मैं प्राप्त कर चुका हूं, इसलिये जीने के लिए कोई लालच नहीं है। परंतु अच्छा काम करने के लिए, समाज में लोक सत्ता स्थापित करने के लिए, जनसत्ता स्थापित करने के लिए, कई साथियों ने कुर्बानी दी, हम तो उतना भी नहीं दे पाये। मेरा एक ही सपना है कि अपने साथियों ने शहीद के रास्ता वरण कर कुर्बानी का रास्ता पर चला है और देश को मुक्ति की गीत सुनाकर गया है, उनका जीवन अगर मुझको मिल जाये, तो बहुत अच्छी बात है। इतना बड़ा पुण्य क्या हो सकता है ? केदारनाथ, बद्रीनाथ जाने से नहीं हो सकता, जो शहीद की मृत्यु में हो सकता है। इसलिये मैं उनको बता दिया ''ठीक है तुमको जो करना है कर लेना मैं तो भूख हड़ताल में बैठ रहा हूं'' और मैं भुख हड़ताल में बैठा। उस समय भी पशु शक्ति आयी, परंतु लोक सत्ता वहां पर स्थापित थी। वहां पर ए.सी.सी. के मजदूर, दूसरे इलाके के मजदूर रात को तीन बजे भी घर जाने के लिए तैयार नहीं है, इतने बड़े बड़े डंडे लेकर वहां पर खड़े हो गये। मैंने कहा, ''कोई जरुरत नहीं है, आप लोग घर चले जाइये। अन्याय के पास कोई शक्ति नहीं है, न्याय के पास शक्ति है, नीति के पास शक्ति है, नीति का मुकाबला, न्याय का मुकाबला अन्याय नहीं कर सकता। मुझे कुछ नहीं होगा, आप देश लेना''। बहुत मुश्किल से हमारे बहनों और भाइयों को हटाया वहां से। कुछ नहीं हुआ। पशु शक्ति वैसी है – कपड़ा, फरिया, खेत के अंदर हिलने वाला, पंछियों को डराने वाला। जब आप पहुंच जाओगे तो देखोगे कि गुंडों के पास कोई ताकत नहीं है। गुंडा क्या, पुलिस के पास कोई ताकत नहीं है। दुनिया में कोई शक्ति नहीं है, जो लोक शक्ति का मुकाबला कर सकती है, जनशक्ति का मुकाबला कर सकती है। इसलिये कोई भी डरने की बात नहीं है, दिल खोलकर चलो, रायपुर से जब स्वीच दबेगा तो कवर्धा हो या नारायणपुर, हर जगह में जाकर लोकसत्ता हावी हो जायेगी। मरणशील तत्वों को मिटा दिया जायेगा, कब्र के अंदर घुसा दिया जायेगा, गाढ़ दिया जायेगा। जीवनशील तत्व वहां पर छाती फूलाकर खड़ा हो जायेगा है कि नहीं ? ऐसा ही होगा, ऐसी उम्मीद है, ऐसी

तमन्ना है, मेरा आपका सपना। इसलिये आज गांव में इसी बात को लेकर जाना होगा।

शक्ति का पूंज कहां है ? छत्तीसगढ़ में शक्ति का पूंज ? कौन शक्ति ? पशु शक्ति। पशु शक्ति का किला कहां है ? आप बोलेंगे रायपुर में। रायपुर में कुछ नहीं है। रायपुर में जो लोग हैं, जो सारे भारत के नेताओं के नाम आप सुनते हैं – चाहे वह कोई भी पार्टी का हो, चाहे वह कांग्रेस का हो, चाहे वह भाजपा को हो, चाहे दूसरा दल का हो, ये सारे लोग भिलाई के पूंजीपतियों के दलाल हैं... ये दलाल, यहां पर, निवास करते हैं और कहते हैं कि हम छत्तीसगढ़ के नेता हैं। परंतु असली ताकत है भिलाई वालों के पास, पंजी उनके पास है ये पूंजीपति लोग वहां पर हावी हैं, वे दिखा रहे हैं कि ''हम हावी हैं''

तो इसलिए छत्तीसगढ़ के नौजवान साथियों, छत्तीसगढ़ के समाजिक कार्यकर्ता साथियों, मेरे दोस्तों, आज आपको इस बात को इस पैगाम को गांव में ले जाना होगा। अपने गांव में जायेंगे तो आपके गांव वाले आपसे पूछेंगे ''क्या करके आये हो रायपुर में ?'' इस बात को पूरा गांव के सामने रखना होगा।

मैं एक उक्ति बोलने को लोभ रोक नहीं पा रहा हूं। जयप्रकाश नारायण जी ने पटना में एक भाषण दिया था। बहुत साल पहले की बात है उन्होंने कहा था ''पटना शहर में तानाशाही हावी है और इसलिये बिहार की जनता को खड़ा होना होगा। हर गांव से, हर शहर से, हर इलाका से आना होगा। पटना शहर में आकर बैठना होगा। जब उन्होंने यह बात उठायी तो बिहार के अन्दर एक आंदोलन का बिगुल फूंक दिया, देश के अंदर नवचेतना पैदा हो गयी। आज मैं आपसे कहता हूं, साथी उसी उक्ति का फिर मैं स्मरण करवाता हूं।

छत्तीसगढ़ के सारे शोषणों की जड़ – इस भिलाई इस्पात कारखाना के इर्द गिर्द रहने वाले मालिक और मैनेजमेंट के लोग, जिन्होंने, पूंजीपतियों ने छत्तीसगढ़ के शोषण की व्यवस्था को जारी रखा है, नेतृत्व दे रहा है, उनका शहर में छाती फूलाकर हर गांव से, छत्तीसगढ़ के हर गांव से – नारायणपुर के, अम्बिकापुरे, सरगुजो, मैनपाट इलाका के, बिलासपुर के, सारे इलाका के साथियों को आप को लाना होगा, भिलाई में, एक दिन इस चीज को तय करने के लिए...

चार हजार गांव हैं। वहां से बीस बीस लोग होंगे ही, तो अस्सी हजार लोग होंगे और भिलाई के अस्सी हजार साथी वहां पर बैठे हुये हैं, आपका स्वागत करने के लिए। इस प्रकार एक लाखों की शक्ति पैदा होगी, जनशक्ति पैदा होगी, जिसके सामने पशु शक्ति सिर उठा कर खडा नहीं हो सकती। जनसत्ता के सामने पशु सत्ता को झुकना होगा, निश्चित रुप से झुकना होगा। अब वह दिन के बारे में तय करना होगा, कौन सा दिन लोक सत्ता को प्रतिष्ठा किया जा सकता है, जनसत्ता को कौन सा दिन प्रतिष्ठा कियसा जा सकता है। कौन सा पुनीत दिन है, अपना पंचाग देखकर उस दिन को निश्चित करना होगा।

परंतु आज चारों ओर के गांव गांव में यह पैगाम फैलाना होगा क हर गांव से लाइये, दस आदमी, बीस आदमी, तीस आदमी। और वे आयेंगे। वे नवयुवक साथी क्यों आयेंगे ? आज छ त्तीसगढ़ में कितनी बेरोजगारी है, कितने बेरोजगार लोग हैं छ त्तीसगढ़ में, गांव गांव में बेरोजगार हैं, ये सी.पी.आई. के लोग, कम्युनिष्ट पार्टी के लोगों ने गांव वालों को ठग रहा है ''चलो मोंगरा बांध बनाना होगा, बनाना होगा'' क्यों ? क्योंकि वहां पर काम मिलेगा। चाहे उससे 200 गांव डूब जायें। फिर मशीनीकरण करना होगा, करना होगा'' क्यों ? हमारी बेराजगारी दूर हो जायेगी। सिर्फ एक महीना के मशीनीकरण का काम, फिर उनको भगा दिया जायेगा। ये सी.पी.आई. वाले इस प्रकार से बदमाशी कर रहे हैं। कम्युनिष्ट पार्टी के लोग इस प्रकार लोगों से चंदा खा रहे हैं, लाखों रुपये चंदा खायें हैं अप लोगों की बस्ती में, आप लोगों के इलाका में। इन लोगों को मुंहतोड़ जवाब देना होगा। और उनको (जनता को) कहना होगा ''चलों साथियों'' आज छ त्तीसगढ़ के इलाका में लोक सत्ता की प्रतिष्ठा का अवसर है। इस मौका को हमें चुकना नहीं चाहिये। और एक ताकत के साथ यहां पर, भिलाई में पहुंचना चाहिये। लोकसत्ता के झंडा को बुलंद करना चाहिए। ठीक है ?

तो इसलिए छ त्तीसगढ़ में एक वह दिन आयेगा। कितने तालाब हैं छ त्तीसगढ़ में ? आपके गांव में तालाब है, सब गांव में तालाब है। सब गांव के तालाब अगर एक तालाब बन जाये अगर ईब नदी, और अरपा नदी, और इंद्रावती, शिवनाथ और महानदी सारी नदियां अगर एक हो जाये, तो कितना पानी होगा ? विशाल ! और उस पानी का

जो समुन्दर का रुप रहेगा, उससे लहर पैदा होगी, वह लहर शोषण के किलाओं पर बार बार मारेगी। एक बार लहर, दो बार लहर, तीन बार लहर, चार बार लहर... और वह बार बार सम्हाल नहीं सकता है, वह किला टूटने वाला है। वह किला कमजोर किला है, क्योंकि उसका नींव कमजोर है, अन्याय के नींव पर खड़ा हुआ वह किला। वह किला टूटेगा, परन्तु छत्तीसगढ़ के सारे गांव के तालाबों का पानी चाहिये, ईब, बांगो, इंद्रावती, शंखिनी, महानदी, शिवनाथ का पानी चाहिये, वहां। ये पानी अगर आयेगा, तो समंदर पैदा होगा, एक महागर्जन पैदा होगा और वह महागर्जन ''इंकलाब जिंदाबाद'' का नारा लगायेगा। तो वह सही मायने में इंकलाब लाने वाली बात होगी, एक गुणात्मक परिवर्तन लाने वाली बात होगी। फिर युद्ध होगा जीवन और मृत्यु का एक दूसरे के खिलाफ। जीवन लड़ेगा, मृत्यु के खिलाफ, मृत्यु लड़ेगी जीवन के खिलाफ। होगी लडाई और लडाई आपको करनी होगी।

एक कहानी है छोटी सी, आदि विद्रोही की कहानी। स्पार्टकिस बोलकर, एक था नेता, वह कोई आजकल का नेता नहीं, जो लेता है। वह बहादुरी करने वाला नेता था, जिन्होंने मुक्ति की गीत गायी थी, ऐसा नेता था स्पार्टकिस। वह गुलामों को जंजीरों से मुक्ति दिलाना चाहते थे उसकी लड़ाई के लिए जान दिये थे। जब स्पार्टकिस पकड़ा गये लड़ाई में, उस समय गुलामों के मालिकों का पता नहीं था, कि कौन है स्पार्टकिस। पूछा कौन है स्पार्टकिस ? वहां उस समय बहुत सारे युद्ध बंदी थे ये सब कहने लगे ''मैं हूं स्पार्टकिस'' वह कहता ''मैं स्पार्टकिस हूं'' यह कहता ''मैं स्पार्टकिस हूं''। इस जगह से आवाज उठती ''मैं स्पार्टकिस हूं'' ''मैं स्पार्टकिस हूं'' ''कौन हूं मैं ? मैं स्पार्टकिस हूं''

हर गांव को इस प्रकार खड़ा होना होगा, और दूसरे लोग जो जनसत्ता स्थापित करने वाले हैं ''मैं फलां गांव वाला हूं'' मैं ढमका गांव वाला हूं''। और इस प्रकार से सारे छत्तीसगढ़ का हर गांव खड़ा हो जायेगा, हर सड़क के मजदूर, बस्ती के मजदूर, झोपड़ी के मजदूर... खड़े हो जायेंगे। गांव और शहर कंधा से कंधा मिलाकर एक नारा बुलंद करेंगे ''मुक्ति चाहिये हमें''। ''किसको मुक्ति चाहिये ?'' ''मुझे मुक्ति चाहिये'' किसको चाहिये ? नारायणपुर वालों को चाहिये, सरगुजा को चाहिये, मैनपाट को

चाहिये, बिलासपुर वाले को चाहिये, रायपुर वाले को चाहिये। हर जगह में हर तरह के लोगों को चाहिये। दल्लीराजहरा के मजदूरों को चाहिये, चांदीडोंगरी माइंस के मजदूरों को चाहिये, हिर्री इलाका के मजदूरों को चाहिये...

फिर देखो कहां से आती है ताकत पशु शक्ति के पास। कोई ताकत नहीं है, पशु शक्ति के पास। पशु शक्ति की मृत्यु होगी। जीवन मृत्यु को दफना देगा।

शहीदों के सपना छत्तीसगढ़

जहां सब ला पीये के पानी मिलही,

जहां हर खेत में सिंचाई के साधन होही,

जहां हर हाथ ला काम मिलही,

जहां किसान ला पैढावार के सही कीमत मिलही,

जहां हर गांव में अस्पताल होही,

जहां हर लइका के सही पढ़ाई बर स्कूल और मास्टर होही,

जहां सब ला भुइयां अऊ घर मिलही,

जहां गरीबी शोषण और पूंजीवाद नई होही,

अइसन छत्तीसगढ़ कब बनही ?

जब किसान मजदूर के छत्तीसगढ़ में राज होही।

का. नियोगी के लेख

- सुबह की तालाश
  छत्तीसगढ़ के छात्र राजनीति में
  नई रोशनी की खोज — 2 रुपये
- हमारा पर्यावरण — 3 रुपये
- का. शंकरगुहा नियोगी के तीन लेख — 4 रुपये
- छत्तीसगढ़ और राष्ट्रीय प्रश्न — 2 रुपये
- भारत के ट्रेड युनियन आन्दोलन की समस्याएं — 2 रुपये
- मार्क्सवाद के मूल सूत्र — 2 रुपये
- 2–3 जून शहीद दिवस शपथ दिवस — 3 रुपये
- का. शंकरगुहा नियोगी के तेरह लेख — 5 रुपये
- आज की पीढ़ी
  और वीर नारायणसिंह कीवसीयत — 2 रुपये
- कार्यकर्ताओं के प्रति संदेश — 3 रुपये

.... छत्तीसगढ़ की जनता के सामने जो सपनायें हैं, उसको पूरा करने के लिए हमारे शहीदों ने जो कुर्बानी दी, उन कुर्बानियों के खून सींचा रास्ता में चलकर उन शहीदों का सपना हमें पूरा करना होगा और एक नया छत्तीसगढ़ नया भारत के लिए कल्पना करना होगा। यह कल्पना करते समय उसे साकार करने के लिए कार्यक्रम बनाना होगा, उसे अमल करना होगा, ईमानदारी पूर्वक अमल करना होगा ...